॥ श्री सेमनागराजदेवाय नमः ॥

श्रीकमलनयनप्राच्यविद्या संस्थानम्

स्व0 श्री पं0 कमलनयन चमोली जी

सदड़ग्रामः सेम-मुखेमः प्रतापनगरम्
(उत्तरद्वारिका रमणीकद्वीपः), टिहरी-गढ़वालः, उत्तराखण्डः 249165
M: 8929024888

पुरातनमपि नूतनं, नूतनमपि पुरातनम् ।
प्राच्यविद्या प्रभावेण, विश्वं भवति भास्वरम् ।।

''सनातन धर्म मे प्राच्य विद्या वह ज्ञान है जो समय की कठोर कसौटी पर खरा उतरा है। यह विद्या प्राचीन होने के उपरान्त भी वर्तमान युग में उतनी ही प्रासंगिक एंव नवीन है, इसके प्रकाश से ही सम्पूर्ण संसार ज्ञान के आलोक से जगमगाता रहा है।''

प्राच्य विद्या केवल अतीत का इतिहास मात्र नहीं है, अपितु इसमें समाहित योग, आयुर्वेद, दर्शन और वैदिक गणित आज भी आधुनिक विज्ञान के लिए प्रेरणा के अक्षय स्रोत बने हुए हैं। जैसा कि शास्त्रोक्त उद्घोष है ''सा विद्या या विमुक्तये'' (अर्थात् विद्या वही है जो बंधनों से मुक्त करे), यह प्राच्य ज्ञान हमें अपनी जड़ों से जोड़कर वैचारिक स्वतंत्रता प्रदान करता है। सनातन परंपरा में यह केवल सूचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक समग्र दृष्टि है। 'प्राच्य' का अर्थ है पूर्व दिशा से संबंधित अथवा प्राचीनता से है, जो भारतीय संदर्भ में उन वेदों, उपनिषदों और दर्शनों का सार है जिन्होंने सहस्राब्दियों से मानवता का पथ-प्रदर्शन किया है।

भारत भूमि, वसुंधरा के उन राष्ट्रों में शिरोमणि है जो अपनी विशाल परम्परा, अद्भुत सभ्यता और अलौकिक संस्कृति के लिए विख्यात है। इसी पावन धरा से उन वेदों का प्राकट्य हुआ है, जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व को ज्ञान-विज्ञान का समृद्ध भण्डार सौंपा और जिनकी पवित्र ऋचाओं ने 'विश्व बन्धुत्व' के मंत्र से मानवता को सदैव अनुप्राणित किया है। यहाँ की सनातनी परम्परा, उपनिषदों और दर्शन ग्रन्थों ने ही जीवन के गूढ़ अर्थ, उद्देश्य की खोज, कर्मयोग, पुनर्जन्म, मोक्ष तथा आत्मा -परमात्मा जैसे रहस्यों से साक्षात्कार कराया है। जहाँ स्मृति ग्रन्थों ने हमें सामाजिक, नैतिक आचरण का विधान निर्मित किया, वहीं ज्योतिष और वास्तु विद्या ने आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ब्रह्माण्डीय शक्तियों और सांसार के मध्य संतुलन स्थापित कर नई ऊर्जा प्रदान की है।

वेद, शास्त्र, पुराण और महाकाव्यों ने हमारे अन्तर्मन में श्रद्धा, भक्ति, त्याग और राष्ट्र धर्म के संस्कार रोपित किए तथा 'धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष' जैसे पुरूषार्थों से हमें सदैव प्रेरित किया। सनातन संस्कृति की यह भव्य गंगा भारत के हृदय से नि:सृत होकर सम्पूर्ण वसुंधरा को निरन्तर पल्लवित एवं पुष्पित करती रही है। देव भूमि उत्तराखण्ड इसी सुदीर्घ परम्परा की जीवन्त कड़ी है, जो ऋषियों के तप, योगियों की साधना और भक्तों की अर्चना से पावन हुई है।

इसी दिव्य भूमि पर, विक्रम संवत् 2078, वसन्त ऋतु, कृष्णपक्ष, दशमी तिथि (तद्नुसार 27 मार्च 2022, रविवार) को उत्तर द्वारिका के रमणीक द्वीप, सदड़ गांव (सेम मुखेम), प्रताप नगर, टिहरी गढ़वाल में ''श्रीकमलनयनप्राच्यविद्या संस्थानम्'' की स्थापना हुई है। जो इस प्राचीन ज्ञान परम्परा को आधुनिक युग में पुर्नजीवित करने का एक पावन संकल्प है।

उक्त संदर्भ में यह संस्कृत सूक्ति चरितार्थ होती है कि...

''उत्तरद्वारिकाक्षेत्रे रमणीके द्वीपसत्तमे। सेमनागेश्वरधाम्नि स्थापितं विद्यासदनम्।।
कमलनयनसंज्ञं तत् प्राच्यविद्याप्रदीपकम्। संस्कारज्ञानविस्तारं करोत्वखिलमङ्गलम्।।''

अर्थात्- उत्तर द्वारिका क्षेत्र के रमणीक द्वीप में सेम नागराजा के पावन धाम में स्थापित यह ''श्रीकमलनयनप्राच्यविद्या संस्थानम्'' प्राच्य ज्ञान का दीप बनकर समस्त समाज में संस्कार और ज्ञान का मंगल विस्तार करे।

जयतु संस्कृतम्

॥ श्री सेमनागराजदेवाय नमः ॥

जयतु भारतम्

''श्रीकमलनयनप्राच्यविद्या संस्थानम्'' का यह क्षेत्र भगवान-श्रीकृष्ण की दिव्यभूमि ''सेम नागराजा'' के रूप में विख्यात है। जहाँ भगवान वासुदेव नागराजा शिला के रूप में विराजमान हैं। पुराणों में इसे उत्तरद्वारिका एवं रमणीक द्वीप कहा गया है। जहाँ भगवान की अनेक लीलाओं एवं क्रीड़ाओं के प्रसंग हैं। इस संस्थान की स्थापना एवं आधारशिला ज्योतिर्विद् कर्मकाण्ड के मूर्धन्य विद्वान स्वर्गीय पण्डित आचार्य श्री कमल नयन चमोली जी की पुण्यस्मृति में आचार्य वासुदेव चमोली जी द्वारा रखी गई।

जयतु संस्कृतम्

॥ श्री सेमनागराजदेवाय नमः ॥

जयतु भारतम्

संस्थान के शैक्षणिक एवं व्यावहारिक उद्देश्य

1. संस्थान का ध्येय केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं, अपितु सनातन पद्धति से संस्कार, शिक्षा और साधना से जोड़ने का माध्यम है।
2. संस्कृत भाषा को व्यावहारिक रूप से पुनः प्रतिष्ठित करना।
3. 'भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा' ध्येय वाक्य का संरक्षण एवं प्रचार।
4. वेद-वेदाङ्ग, उपनिषद्, गीता आदि ग्रन्थों में निहित धर्म, नीति और जीवन मूल्यों का शिक्षण।
5. ज्योतिष, वास्तु और कर्मकाण्ड की परम्परा का विधिवत् अध्ययन एवं अध्यापन।
7. परा एवं अपरा विद्या का शिक्षण।
8. आधुनिक शिक्षा को धर्म और आध्यात्म से जोड़कर जीवनोपयोगी बनाना।
9. समाज की भावी पीढ़ी को संस्कारित एवं आचरणशील नागरिक बनाना।
10. पर्यावरण संरक्षण संवर्धन हेतु विशेष अभियान।
11. नारी सशक्तिकरण।
12. योग ध्यान और संस्कृत शिक्षा प्रकल्पों का सवर्द्धन।

जयतु संस्कृतम्

॥ श्री सेमनागराजदेवाय नमः ॥

जयतु भारतम्

संस्थान में शिक्षण के प्रमुख विषय

- पारम्परिक शास्त्राध्यन तथा जीवनोपयोगी विषयों का शिक्षण एवं प्रशिक्षण
- वेद एवं वेदाङ्ग
- संस्कृत साहित्य
- आस्तिक एवं नास्तिक दर्शन
- व्याकरण एवं संस्कृत सम्भाषण
- योग एवं ध्यान-क्रिया
- आयुर्वेद एवं औषध विज्ञान
- ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड
- वास्तुशास्त्र
- संगीत एवं कला
- पत्रकारिता एवं संचार
- वैदिक गणित
- भारतीय भाषाओं का प्रशिक्षण एवं लोक कला, गीत/संगीत
- उद्यमिता एवं हस्तकला प्रशिक्षण

जयतु संस्कृतम्

॥ श्री सेमनागराजदेवाय नमः ॥

जयतु भारतम्

संस्थान के प्रमुख आयाम

- आवासीय संस्कृत गुरूकुल।
- वेद वेदांगों का प्रशिक्षण एवं ऋचाओं का प्रयोग एवं विनियोग।
- आयुर्वेदिक औषधि उद्यान।
- शोध एवं प्रकाशन विभाग।
- संगीत एवं कला अकादमी।
- डिजिटल शिक्षा केन्द्र।
- राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ।
- संस्कृति संरक्षण संग्रहालय।
- साधना एवं ध्यान केन्द्र।
- निःशुल्क चिकित्सा शिविर।
- नदियों एवं गौ संरक्षण योजनाएँ।
- वैदिक कृषि पद्धति।
- युवाओं हेतु कौशल विकास।
- ऑनलाईन संस्कृत पाठशाला।
- उत्तराखण्ड पारम्परिक संग्रहालय।
- उत्तराखण्ड लोक संगीत/नृत्य कला/वाद्ययंत्रों आदि का प्रशिक्षण एंव संग्रहण।
- निर्धन असहाय छात्रों हेतु निःशुल्क शिक्षा एवं छात्रवृति योजना।

जयतु संस्कृतम्

॥ श्री सेमनागराजदेवाय नमः ॥

जयतु भारतम्

संस्थान को जनसहयोग से अपेक्षाएं -

यह संस्थान केवल संगठन का नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज का दायित्व है। सनातन संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्द्धन तथा नई पीढ़ी तक पहुँचाना हम सब का कर्तव्य है।

1. धार्मिक ग्रन्थ एवं पाण्डुलिपियाँ।
2. औषधीय पौधे एवं जड़ी बूटियाँ।
3. भवन निमार्ण में भौतिक वस्तु जैसे सीमेन्ट, सरिया आदि।
4. स्वयंसेवी सेवाऐं।
5. आर्थिक सहयोग **(Donation@Support)**

बैंक विवरण

Name	:	**Shri Kamal Nayan Prachay Vidhya Sansthanam**
Bank Name	:	**Punjab National Bank**
Account No.	:	**9181000100041368**
IFSC Code	:	**PUNB0918100**
Branch	:	**Lambgaon, Tehri Garhwal- 249165**
Mobile No.	:	**8929024888**

पंजाब नेशनल बैंक punjab national bank

SCAN AND PAY WITH ANY BHIM UPI

9520692700m@pnb

SHRI KAMAL NAYAN PRACHAY VIDHYA SANSTHANAM

"श्रीकमलनयनप्राच्यविद्या संस्थानम्"
ध्येय गीत

ये सुरम्य पावन पुनीत जप तप का ये संस्थान है,
जिसको उत्तर द्वारिका कहते ऐसा उत्तम धाम है,
प्रभु कृष्ण ही शेषनाग के रूप में यहां विराजे हैं ।
पंचम धाम है बड़ा निराला भक्त मण्डली साजे हैं,
योग, ध्यान, ऋषि, मुनियों की तपोभूमि महान है,
ऐसा श्रेष्ठ ये ज्ञानरूप का श्री कमलनयन संस्थान है ॥
प्राच्यकाल से भारत की गौरव गाथा बतलाता है,
आर्य सभ्य संस्कृति का ये उन्नत परचम फहराता है,
योग प्रशिक्षण, कर्मकाण्ड, संगीत ज्ञान की धारा है ।
जिससे प्लावित होकर जन ज्ञानामृत को पाता है,
संस्कृत है व्यवहार की भाषा ये उद्घोष महान है,
इन सबका संरक्षण करता श्री कमलनयन संस्थान है ॥
गीता, ज्योतिष, आयुर्वेद का नित्यप्रति गुणगान है,
संस्कृति, सभ्यता, परम्परा का होता यहां आह्वान है,
वास्तुशास्त्र, वैदिक गणित के सूत्रों का विस्तार है ।
संस्कारों की धरती यहां पर होता मंत्रोच्चार है,
शेषनाग की ध्वजा का वाहक अपना ये सम्मान है,
भारतीय संस्कृति का पोषक श्री कमलनयन संस्थान है ॥

॥ श्रीसेमनागराजाष्टकम् ॥

केदारखण्डे टिहरीसुदेशे श्रीविष्णुधामातिपुनीततीर्थम्।
तत्पञ्चमं धामसु देवभूमौ नमामि सेमस्थितनागराजम्॥1॥
सौराष्ट्रदेशे खलु द्वारिका या काले कलावुत्तरद्वारिकेयम्।।
तं द्वारिकाधीशमनन्तवासं नमामि सेमस्थितनागराजम्।।2॥
शतरञ्जनाम्ना क्रीडास्थलन्ते रम्यं मनोहारि सुखं नराणाम्।।
शान्तस्थलं सौम्यस्वरूपदेवं नमामि सेमस्थितनागराजम्॥।3॥
रमणीकदिव्याद्रिवने वसन्तं शेषावतारन्तु शिलात्मकं त्वाम्।
गुप्तारुणिं वारुणितलबलाख्यं नमामि सेमस्थितनागराजम्।।4।
गंगूरमोलानाम्नातिदिव्यं राज्ञा स्थापितं तीर्थमिदं पवित्रम्।
सिदुवाजलं व्याधिविनाशकं तत् नमामि सेमस्थितनागराजम्।।5॥
हे सेमनाथेश्वर! नागराज! त्वं कालियामर्दन-देव कृष्ण।
भगवन्मुरारिं मधुकैटभारिं नमामि सेमस्थितनागराजम्।।6।।
श्रीसेमनागाधिपतिं सुरेशं श्रीशक्तिमम्बां प्रकृतिं भवानीम्।
सेमाद्रिमध्ये विलसन्तमेकं नमामि सेमस्थितनागराजम्।।7॥
सन्दीपनीदीपमुखप्रगीतं श्रीनागराजाष्टकपद्यपुष्पम्।
भक्त्यार्पितं तुभ्यमिदं प्रभो हे नमामि सेमस्थितनागराजम्।।8।

संरक्षक/मार्गदर्शक
स्वामी डॉ. अनन्तानन्द जी गिरी
पं. गणपति प्रसाद जगूड़ी

संस्थापक/अध्यक्ष
आचार्य वासुदेव चमोली

सचिव
डॉ. सतीश नौटियाल

कोषाध्यक्ष
आचार्य नीरज भट्ट